समेकित कीट प्रबंधन

- कीटों के प्रकोप से बचने के लिए फसल की बुआई शीघ्र कर देनी चाहिए। अगेती फसल में लाही का प्रकोप कम देखने को मिलता है।
- कृत्रिम खादों का प्रयोग अनुशंसित मात्रा में करना चाहिए। अत्यधिक नाइट्रोजन युक्त खादों का प्रयोग करने से रस चूसने वाले कीटों के प्रकोप में वृद्धि होती है।
- प्रारम्भिक अवस्था में जब आरा मक्खी की सुंडियां व् पेंटेड बग के शिशु झुण्ड में पत्तों पर दिखते हैं तो तुरंत पत्तों समेत कीटों को नष्ट कर देना चाहिए।
- बिहार हेयरी कैटरपिलर की सुंडियां जब शुरू में सामूहिक रूप में नुकसान करती हैं उसी समय प्रभावित पौधों को सुंडियों के समेत नष्ट कर देना चाहिए।
- दिसंबर माह में फसल की निगरानी करनी चाहिए। निगरानी के लिए पीले चिपचिपे @ 4-5/एकड़ खेत में लगाने चाहिए जिससे लाही ट्रैप में चिपकना शुरू हो जाता है और इसके आगमन का पता चलता है।
- यदि लाही का प्रभाव कम हो तो शुरुआती अवस्था में नीम तेल @ 3 मि. ली./ ली. की दर से छिड़काव करना चाहिए।
- आर्थिक क्षति स्तर पार करने से पहले कीटनाशकों जैसे थायमिथोक्साम 25 WG (0.2 ग्राम/लीटर) या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL (1 मि.ली./3 ली.) या डाइमेथोएट 30 EC (1.5 मि.ली./ली.) का छिड़काव करें। यदि कीटों का प्रकोप कम न हो तो एक अतिरिक्त छिड़काव 15 दिन के अंतराल में फिर से करें। बिहार हेयरी कैटरपिलर की रोकथाम के लिए क्वीनलफास 25 % EC (2 मि.ली./ली) का छिड़काव करना चाहिए।
- फूल वाली अवस्था में कीटनाशकों का छिड़काव नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से परागण करने वाली मधुमक्खियों एवं अन्य मित्र कीटों को नुकसान पहुँचता है जिससे उत्पादन में कमी आती है।

सम्पर्क करें :-

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिपाया (गोपालगंज)

मो.- +91 6287797171

प्रसार पुस्तिका- RPCAU/2025/0049

सरसों के प्रमुख कीट एवं उनका समेकित प्रबंधन

अभिषेक राणा
विषय वस्तु विशेषज्ञ, पौधा सरंक्षण

अनुपमा कुमारी
वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

नवीन कुमार
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि अभियांत्रिकी

अनीता गौतम
विषय वस्तु विशेषज्ञ, गृह विज्ञान

श्रीप्रिया दास
विषय वस्तु विशेषज्ञ, फसल उत्पादन

रविकांत कुमार
प्रक्षेत्र प्रबंधक

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिपाया, गोपालगंज
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
समस्तीपुर (बिहार)-848125

Scanned with OKEN Scanner

भारत में मुख्यत: सात तिलहन फसलों की खेती की जाती है। तिलहन फसलों के कुल उत्पादन का एक तिहाई भाग रेपसीड और सरसों से आता है। राजस्थान, हरयाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार इत्यादि राज्य इसके मुख्य उत्पादक हैं। सरसों की फसल में कई प्रकार के कीट एवं रोग लगते और क्षति पहुंचाते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में ये कीट व् रोग 70-80 प्रतिशत तक नुकसान कर सकते हैं। इन कीटों व् रोगों की समय की रोकथाम की जाये तो फसल उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

सरसों के मुख्य कीट

लाही (एफिड)

सरसों का सबसे महत्वपूर्ण कीट लाही है। इसके वयस्क और शिशु दोनों ही पत्तियों, कलियों और फलियों से रस चूसते हैं। लाही फसल की किनारों की पंक्तियों में सबसे पहले आक्रमण करता है उसके बाद धीरे-धीरे अंदर की तरफ अग्रसर होता है। इससे संक्रमित पत्तियाँ मुड़ जाती हैं और बाद में पौधे सूखकर मुरझा जाते हैं जिससे पौधों का विकास रुक जाता है। यह कीट एक चिपचिपा पदार्थ पौधे की पतियों व् अन्य भागों में छोड़ते हैं जिसमे एक काले रंग का कवक जमा हो जाता है जो प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में बाधा उत्पन्न कर पौधे के विकास को प्रभावित करता है।

आरामक्खी (सॉ फ्लाई)

इस कीट की सूडियां काले स्लेटी रंग की होती हैं। यह कीट फसल के अंकुरण के 30-35 दिन के बाद ही सक्रिय हो जाता है और शुरुआती अवस्था में छोटी सूंडियां पत्तों को कुतरने का काम करती हैं। बड़ी सूंडियां पत्तों को किनारों से खाती हुई मध्य शिरा की तरफ बढ़ती हैं और गंभीर आक्रमण होने के कारण पत्ते का हरा भाग खत्म को जाता है और अंत में पूरी पत्तियाँ शिराओं के जाल में परिवर्तित हो जाती हैं।

पेंटेड बग (चित्रित बग)

यह कीट काले रंग का होता है व् इस कीट के शरीर पर लाल, पीले व् नारंगी रंग के धब्बे होते हैं। इसके व्यस्क व् शिशु पौधे की पत्तियों, कलियों, फूल व् फलियों से रस ग्रहण करते हैं। प्रभावित पत्तियाँ किनारों से सफ़ेद होने लगती हैं और अंत में मुड़ने लगती हैं और गिर जाती हैं। फलियाँ रस चूसने के कारण सिकुड़ जाती हैं जिससे बीजों का विकास रुक जाता है और तेल का उत्पादन कम हो जाता है।

बिहार हेयरी कैटरपिलर

इस कीट की सुंडियां (ताड़ा) फसल को शुरुआती अवस्था से ही नुकसान पहुँचाना शुरू कर देती हैं। इस कीट की सुंडियां सामूहिक रूप से पत्तियों से क्लोरोफिल को खाती हैं, जिसके कारण पत्तियाँ भूरे-पीले रंग की दिखती हैं। यह कीट बाद की अवस्था में पत्तियों को किनारों से खाता है और पत्तियों में जाले बना देता है जिससे पत्ते सूखने लगते हैं और फसल को काफी क्षति पहुँचती है।

पत्ती सुरंगक कीट

इस कीट के शिशु पत्तियों के हरे भाग को खाते हैं और इस प्रक्रिया में वे पतियों में अनेक टेढ़ी मेढ़ी सुरंगे बना देते हैं जिससे पौधे के विकास पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

Scanned with OKEN Scanner